❐ एलेन गुडमैन

पिता की छाया में

[हर पिता को लगता है कि उसके बेटे उसी राह चलें जिस पर वह चला है, हर बात को इस तरह सीखें जैसे आज तक किसी ने नहीं सीखा है।]

बच्चे बड़े होते जा रहे हैं उसके। जब यह अपने आप में कोई खास खबर भी नहीं, फिर भी पास वाली बेंच पर बैठी महिला को यही बताता है वह। यही तो करते हैं बच्चे। उनके साथ यही तो लगा रहता है।

इसके बावजूद बेसबाल के मैदान पर नजरें गड़ाए वह यही कहता है। उसका खयाल था कि बच्चे धीरे-धीरे बड़े होते जाएँगे। परंतु इसके विपरीत वे धचकते से एक से दूसरी उम्र की दूरी तय किए जा रहे हैं। बड़े को ही लो, विचित्र ढंग से गाड़ी बदलता है तो कैसी दहलाने वाली आवाज होती है।

उसे याद है, बड़ा कुल तीन बरस का था और नर्सरी स्कूल जाता था। एक बार वह डैडी की उंगली पकड़े स्कूल जा रहा था तो उसने किसी को राह चलते हुए हेलो कहा। आखिर यह कैसे संभव है कि बेटा किसी से परिचित हो और बाप नहीं। तब भी उसे स्वतंत्रता की उस बिजली का हलका झटका महसूस हुआ था।

अब लड़कों की जीवनधारा बदल रही है। बड़े को कार चलाने का लाइसेंस मिलने जा रहा है और सबसे छोटा भी माध्यमिक स्कूल में दाखिले की ओर अग्रसर है।

तभी उसका १३ वर्षीय बेटा बल्लेबाजी के लिए सामने आता है। हफ्तों, महीनों का वक्त लगा कर उसने इस खेल पर अधिकार भी पा लिया है और बढ़िया खिलाड़ी बन गया है वह...उसकी कलाइयाँ, उसके खड़े होने के ढंग और उसकी आँखें भी यही जताती हैं। लगता है उसके शरीर का अंग अंग आज किसी अंतिम परीक्षा की तैयारी में क्रियाशील रहा है। वह बल्ला घुमा कर शानदार प्रदर्शन भी करता है–पहले बेस से दूसरे बेस में पहुँच जाने का।

पिता इस खेल को ठीक उसी तरह देख रहा है जैसे कि माँ-बाप देखा करते हैं। एक क्षण गौरव की अनुभूति होती है, तो दूसरे ही क्षण छिद्रान्वेषण शुरू हो जाता है। फिर अभिभावक होने का मतलब ही होता है अतिशय अपेक्षाएँ। परंतु आज उसकी अनुभूति एक भिन्न प्रकार की है–कहीं विस्मय व उत्कंठा का मिश्रण है तो कहीं स्नेह व विछोह के बीच का भी।

छोटी-छोटी बातें याद आ रही हैं। स्कूल से मिलने वाले गृहकार्य का स्वरूप भी अब बदलता जा रहा है। लकड़ी के टुकड़े जोड़ कर छोटी मेज बना कर लाने की जगह अब लकड़ी के शमादान का महीन काम मिलने लगा है। मोमी रंग के चित्रों का स्थान अब नागरिक शास्त्र का लंबा चौड़ा परचा ले चुका है।

उसका कहना है कि वह भी शायद एक प्रकार की किशोरावस्था के दौर से गुजर रहा है। अपने बच्चों को लेकर संभवत: माँ-बाप को उस दौर से दोबारा गुजरना ही पड़ता है जबकि एक ओर तो बच्चों के फूलते-फलते रहने की सुखद अनुभूति होती है और दूसरी ओर अपनी छाँव से उनके निकल चलने की व्यथा भी सालती है।

ये दोनों स्त्री और पुरुष बातें कर ही रहे होते हैं कि टीमें अपना-अपना स्थान बदल लेती हैं। बाप का तेरह वर्षीय बेटा लपक कर खेल का दस्ताना उठा लेता है और तीसरे बेस की ओर बढ़ जाता है, तभी कोई जोर की हिट लगाता है, बाल जमीन को छूती हुई उसके समानांतर उठती है और बेटे के हाथ में आकर भी उस से छूट जाती है।

पिता क्षण भर को अपनी सीट से उचकता है, फिर बैठ जाता है। वह महिला को बताता है : दो साल पहले यही नौबत आई होती तो इसके आँसू निकल जाते, पर अब यह जल्दी ही संयत हो जाता है। महिला कहती : दो साल पहले तो आप भी उसे बार-बार ऐसे खेलो, वैसे खेलो कह रहे होते; पर आज देखिये तो कैसे चुपचाप बैठे उसका खेल देख रहे हैं।

हामी भरते हुए वह बोल उठता है, हम दोनों ही बड़े होते जा रहे हैं। कभी यही पुरुष सोचता था कि पितृत्व के बारे में वह बहुत

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुछ जानता है। आखिर वह खुद भी तो कभी बच्चा था, उसके भी पिता थे। वह कल्पना करता आया था कि वह अपनी जवानी के कंटकों से बचा कर अपने बच्चों को संभाले लिए जा रहा है। सोचता था कि उसने जो नींव रखी है, जहाँ तक निर्माण किया है; उसके बच्चे आगे का गगनचुंबी निर्माण करेंगे।

परंतु उसके लड़के बहुत कुछ वैसे ही निकले जैसा कि कभी वह स्वयं था। अब धीरे-धीरे उसने सुप्रसिद्ध अंगरेजी उपन्यासकार डोरिस लेसिंग के इस कथन को स्वीकार करना भी शुरू कर दिया है : ''उसके लड़के को एकदम उसी राह पर चलना होगा जिस पर वह स्वयं या उसके समकालीन चल चुके हैं ताकि वह सब बातों को इस तरह सीखे जैसे कि आज तक कोई नहीं सीखा है।''

इस हिसाब से, वह स्वयं भी वही सब सीखता रहा है जिन्हें कभी स्वयं उसके पिता ने भावनाओं की गहराई, बच्चों के प्रति आसक्ति और उन्हें अंततः उन्मुक्त छोड़ देने की आवश्यकता को लेकर सीखा था।

तभी मैच खत्म हो जाता है। वह दुबला-पतला, लंबा सा लड़का लंबे-लंबे डग भरता उसकी ओर आता है। वह उसे अपना दस्ताना और गेंद थमा देता है। अब वह अपनी टीम के साथियों के साथ जाकर पीत्सा खाने के लिए पैसे मांग कर वहाँ से उड़नछू हो लेता है। मैदान की अभी आधी ही दूरी उसने तय की होगी कि पलट कर चिल्लाता है, ''डैड, आने के लिए थैंक्स।''

पिता भी हाथ हिलाता है। ठीक है, ठीक है। सच यही तो हमेशा होता है। बच्चे देखते ही देखते बड़े हो जाते हैं।

■

हँसते हँसते जीना

बैंक में आए लुटेरे ने खजांची को एक पुरजा लिख कर थमा दिया : ''सारा पैसा थैले में डाल दो और हिलो नहीं, समझी बुलबुल?''

संदेश पढ़ने के बाद खजांची ने कागज के उस पुरजे के पीछे कुछ लिख कर लुटेरे को वापस दे दिया। उसका संदेश था : ''अपनी टाई तो ठीक कर लो चोंच। सुरक्षाकर्मी गुप्त टी.वी. कैमरे पर तुम्हारा थोबड़ा देख रहे हैं।''

एक बड़े कंपनी समूह के अध्यक्ष की अचूक निर्णय क्षमता की बड़ी ख्याति थी। एक बार उसने कर की मार से बचने के फेर में एक योजना पर पैसा लगाया। सारी योजना धोखाधड़ी सिद्ध हुई और एक लाख डालर का नुकसान हो गया। उसके व्यावसायिक सहयोगी उस पर फब्तियाँ कसते और आयकर विभाग ने भी सारे मामले की जाँच पड़ताल शुरू कर दी। इस स्थिति को सहना बड़ा कठिन था सो एक दिन अपने दफ्तर के मोटे कालीन पर वह भहरा कर गिर पड़ा और रोने लगा, ''मैं रोजाना लाखों करोड़ों का सौदा करता हूँ, पर शायद ही कभी नुकसान होता हो। इस बार मैंने इतनी बड़ी बेवकूफी आखिर कर कैसे की।'' तभी दफ्तर का फरनीचर डोलने लगा, रोशनी मंद पड़ गई तथा उसके कम्प्यूटर से गर्जन हुई : ''तुम समझते हो कि अकेले तुम्हीं तुम परेशान हो। मुझे देखो, मैं खुद इस खेल में कम से कम पाँच लाख के वारे न्यारे कर लेने के फेर में था।''

■

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org